कृषि विज्ञान केन्द्र
पिपराकोठी, पूर्वी चम्पारण–845429 (बिहार)
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(14 अगस्त -18 अगस्त, 2019)

रेफरेस 16/AAS/ पिपराकोठी **दिनांक** 13.08.2019

कृषि मौसम सलाह बुलेटिन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- **पूर्वानुमान की अवधि में के आसमान में बादल छाए रह सकते हैं। प्रखंड में कुछ स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा होने की संभावना है।**
- **अधिकतम तापमान 34 से 36 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। न्यूनतम तापमान 26 से 28 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।**
- **सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 55 से 85 प्रतिशत रहने की संभावना है।**
- **पूर्वानुमानित अवधि में मुख्यतः पूरवा हवा औसतन 15 से 20 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से रहने का अनुमान है।**

फसल	अवस्था	अगस्त माह के द्वितीय सप्ताह में किसानों के लिए मौसम आधारित कृषि सलाह
धान		धान की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए रोपाई के एक सप्ताह के अन्दर ब्यूटाक्लोर (3 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर) या प्रीटलाक्लोर (1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टर) या पेन्डीमिथेलीन (3 लीटर दवा प्रति हेक्टर) का 500–600 लीटर पानी मे घोल बनाकर एक हेक्टर क्षेत्र में छिड़काव करें। छिड़काव के वक्त खेत मे ं एक से0मी0 पानी की उपस्थति रहनी चाहिए।
अरहर		अगात बोयी गई अरहर की फसल में निकौनी तथा छटनी करे। सितंबर अरहर के लिए खेत की तैयारी करें।
गन्ना		रस चूषक कीट पायरीला का प्रकोप दिखाई देने पर मोनोक्रोटोफॉस 1 मिली लीटर/पानी में या इमिडाक्लोपिड 1 मिली लीटर/2 लीटर पानी में छिड़काव करें।
सब्जियों		परवल की राजेन्द्र परवल–1, राजेन्द्र परवल–2, एफ0पी0 1, एफ0पी0 3, स्वर्ण रेखा, स्वर्ण अलौकिक, आई0आई0भी0आर0–1,2,105 किस्मों की रोपनी करें। बीज दर 2500 गुच्छियाँ प्रति हेक्टेयर तथा लगाने की दुरी 2ग2 मीटर रखें। परवल की रोपाई के लिए प्रति गड्ढ़ा कम्पोस्ट 3 से 5 किलो ग्राम, नीम या अंडी की खल्ली 250 ग्राम, एस0एस0पी0 100 ग्राम, म्यूरेट ऑफ पोटाश 25 ग्राम एवं थिमेट 10 से 15 ग्राम का व्यवहार करें। परवल के अच्छे फलन के लिए 5 प्रतिशत नर पौधे की रोपाई अवश्य करें। हल्दी, अदरक, ओल और बिगत माह बोयी गई बरसाती सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई–गुड़ाई करें। इन फसलों में कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
मिर्च		मिर्च का बीज उथली क्यारियों मे गिराये। इसके लिए उन्नत प्रभेद पंत मिर्च–3, कृष्णा, अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, पंजाब लाल, काशी अनमोल तथा संकर किस्में अग्नि रेखा,

		कल्याणपुर चमन, कल्याणपुर चमत्कार, बी0एस0एस0–267 अनुशंसित है। बीज को गिराने से पूर्व थीरम 75 प्रतिशत दवा से बीजोपचार करें। किसान जिनका मिर्च का बिचडा तैयार हो, वे रोपनी करें। रोपाई पूर्व जीवाणु खाद से विचड़ों का उपचार अवश्य करें।
खरीफ प्याज		प्याज की बीजस्थली में जहाँ बिचड़े 15 से 20 दिनों के हो गये हों, में खर–पतवार निकालें। पौधशाला को धूप अथवा वर्षा से बचाने के लिए 40 : छायादार नेट से 6–7 फीट की ऊचाई पर ढ़कने का कार्य करें। आर्द्रगलन (डेम्पिंग ऑफ) रोग की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
फूलगोभी		फूलगोभी की अगात किस्में कुँआरी, पटना अर्ली, पूसा कतकी, हाजीपुर अगात, पूसा दिपाली की रोपाई करें। खेत की तैयारी के समय 20 से 25 टन सड़ी गाोबर की खाद, 30 किलोग्राम नेत्रजन, 60 से 80 किलोग्राम फॉस्फोरस, 40 से 60 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बोरान तथा मॉलिब्डेनम तत्व की कमी वाले खेत में 10–15 किलो ग्राम बोरेक्स तथा 1–2 किलोग्राम अमोनियम मालिब्डेट का व्यवहार करे।
प्याज		प्याज का पौध 45–50 दिनों का हो गया हो वे पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी 15 से0मी0, पौध से पौध की दुरी 10 से0मी0 पर रोपाई करें। खेत की तैयारी के समय 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद, 60 किलोग्राम नेत्रजन, 80 किलोग्राम स्फुर एवं 80 किलोग्राम पोटाश के साथ 20 किलोगाम सल्फर का व्यवहार करें। प्याज के पौध की रोपाई के लिए खेतो को समतल कर छोटी–छोटी उथली क्यारियाँ बनावें, जिसकी चौड़ाई 2 मीटर एवं लम्बाई 3 से 5 मीटर तक रख सकते हैं। प्रत्येक दो क्यारियो के बीच जल निकास हेतु नालियाँ अवश्य बनावें।
पपीता		पपीता की नर्सरी उथली क्यारियों (10–15 सेन्टी मीटर ऊँची) में बोयें। इसके लिए उन्नत प्रभेद पूसा ड्वार्फ, पूसा नन्हा, पूसा डीलीसीयस, सी0ओ0– 07, सुर्या एवं रेड लेडी है। बीजदर 300–350 ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बीज को वैविस्टन 2 ग्राम प्रति किलोग्राम की दर से उपचारित कर क्यारियों में 07–10 सेन्टीमीटर की दुरी पर बोयें।
आम		किसान अपने पसंद के अनुसार अलग–अलग समय में पकने वाली आम की किस्मो ं का चयन कर सकते हैं। मई के अन्त से जून माह मे पकने वाली किस्में मिठुआ, गुलाबखास, बम्बई, एलफॉन्जों, जड़दालू, जून माह मे ं पकने वाली किस्में लंगड़ा (मालदह), हेमसागर, कृष्णभोग, अमन दशहरी, जुलाई माह में पकने वाली किस्में फजली, सुकुल, सिपिया, , अगस्त मे पकने वाली किस्मे ं समरबहिश्त, चौसा, कतिकी है। आम के संकर किस्मों के लिए महमूद बहार, प्रभाष ंकर, अम्रपाली, मल्लिका, मंजीरा, मेनिका, सुन्दर लंगडा राजेंद्र आम–1, रत्ना, सबरी, जवाहर, सिंधु, अर्का, अरुण, मेनका, अलफजली, पूसा अरुणिमा आदि अनुशंसित है। कलमी आम के लिए पौधा से पौधा की दुरी 10 मीटर, बीजु के लिए 12 मीटर रखें। आम्रपाली किस्म की सघन बागवानी हेतु पौधो ं को 2. 5 x 2.5 मीटर की दूरी पर लगा सकते हैं।
लीची		लीची के लिए, मई के अन्त में पकने वाली किस्में जैसे देशी,शाही, अर्लीवेदाना, देहरारोज, पूर्वी तथा रोज सेण्टेड, जून के आरंभ में पकने वाली किस्में जैसे– कसवा, सबौर वेदाना, चाईना तथा लेट ब ेदाना, जून के मध्य में पकने वाली किस्में जैसे– कसैलिया, लौंगिया, स्र्वणरुपा, सबौर मधु, सबौर प्रिया आदि है ं। उपजाऊ मिट्टी मे ं 10 x 10 मीटर की दुरी पर पौधों की रोपाई करें।
चारा		पशुओं के चारा के लिए ज्वार, बाजरा तथा मक्का की बुआई करें। इसके साथ मेथ, लोबिया तथा राईस बीन की बुआई अन्तर्वती खेती में करने से चारे की गुणवता बढ़ जायेगी तथा दुधारु पशुओं के लिए पौष्टिक चारा प्राप्त होगा।
फलदार वृक्ष तथा वानिकी पौधें		पहले से तैयाार गढ़ों में फलदार एवं वानिकी पौधों को लगाने का कार्य करें। पौधों को दीमक तथा सफेद लट कीट से वचाव हेतु 5 मी0ली0 क्लोरपाइरीफॉस दवा 1 ली0 पानी में मिलाकर पौधा लगाने के बाद गढ़े में दे।
फल परिरक्षण		कृषक महिलायें बादल आच्छादन को ध्यान रखते हुए अचार बनाने ,करेला, भिंडी आदि सब्जियों को सुखाने तथा आलू के चिप्स बनाने में सांवधानी बरतें।
दूधारु पशु		गौशाला में रात के समय नीम की पत्तियों या गोइठा का धुआं करें ताकि मच्छर तथा मक्खियों के प्रवेश पर नियंत्रण हो सके। पशुओ के निवास स्थान की साफ–सफाई करते रहे। दूधारू पशुओं को

		हरे चारे के साथ–साथ सूखा चारा (50:50) के अनुपात में खिलायें तथा 20–30 ग्राम खनिज मिश्रण व नमक प्रतिदिन दें। पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच0एस0 (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओ को टीके लगावें।
मृदा स्वास्थ्य	कटाई उपरांत	समय से बोये गये धान के खेत में पानी बराबर देते रहें। यदि धान की फसल तीस से पैतालीस दिन के बीच हो तो नेत्रजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। खेत के पानी को दूसरे खेत में नहीं जाने दे।

डा. अरविन्द कुमार सिंह वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
9473000861
head.kvk.piprakothi@rpcau.ac.in

नेहा पारीक वैज्ञानिक (कृषि मौसम)
9368411887
gkmseastchamparan@gmail.com